Volume : 5 | Issue : 12 | December-2016 ISSN - 2250-1991 | IF : 5.215 | IC Value : 79.96

Original Research Paper History

ikphu Hkkjrh; lekt esa eukjatu dh lk/ku ds :i esa of.kZr uR; ¼tSu egkiqjk.k ds fo"k'k lanHkZ esa½

Ruchi Jain | Research Scholar, Department of History, University of Kota.

KEYWORDS

जैन पुराणों में महापुराण सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं विस्तृत है महापुराण के दो भाग है – आदिपुराण तथा उत्तरपुराण। आदिपुराण की रचना आचार्य जिनसेन ने लगभग नवीं शती ई. के पूर्वार्द्ध में तथा उत्तरपुराण की रचना उनके शिश्य गुणभद्र ने नवीं शती ई के अन्त या दसवीं शती ई. के प्रारम्भ में थी। इन दोनों पुराणों को संयुक्त रूप से महापुराण कहा जाता है, इसमें चौबीस तीर्थकरों, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 नारायण और 9 प्रतिनारायण सहित कुल 63 शलाका पुरूशों के जीवन चरित्र का विस्तारपुर्वक निरूपण हुआ है।

महापुराण को भारतीय संस्कृति का विश्वकोश कहा गया है। इसमें विभिन्न कथाओं के माध्यम से धार्मिक जीवन के विविध पक्षों के साथ ही सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और कलापरक विशयों में मनोरंजन की पूर्णरूपेण छाप दिखलाई पड़ती है। ऐसा कोई विशय नहीं है, जिसका इसमें प्रतिपादन न किया गया हो। महापुराण में ही वर्णित है कि यह पुराण, महाकाव्य धर्मकथा, धर्मशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, आचारशास्त्र और युद्ध की श्रेश्ठ व्यवस्था सूचक महान इतिहास है। महापुराण कालीन शासक राश्ट्रकूट राजा अमोधवर्श प्रथम एवं कृश्ण द्वितीय के काल की सांस्कृतिक घटनाओं का अभुतपूर्ण वर्णन इसमें मिलता है। कला एवं मनोरंजन के तत्वों की गवेशणा कर तत्कालीन युग के मनोरंजन के साधनों की विस्तृत सूची हमें मिलती है। महापुराण कालीन समाज में शारीरिक एवं मानसिक समास्याओं के निवारणार्थ एवं जीवन में सुख शान्ति, उत्साह, कौतुहल आदि मानवीय गुणों के विकास के लिए अनेक मनोरंजनात्मक साधनों का प्रादुर्भाव हुआ। इस संदर्भ में नृत्य का वर्णन किया जाना यहाँ श्रेयस्कर है।

प्राचीन काल से समाज के सभी वर्गो में नृत्य के प्रति अभिरूचि मिलती है। उत्सव, जन्म, हर्श, काम, त्याग, विलास, विवाद तथा परीक्षा आदि अवसरों पर नृत्य किया जाता था। इस युग में नृत्य मनोरंजन का लोकप्रिय साधन था। भगवान आदिनाथ ने पुत्र भरत को संपूर्ण नृत्यशास्त्र की शिक्षा दी थी।[1] इससे महापुराण कालीन समाज में नृत्य की लोकप्रियता का पता लगता है। प्राचीन काल से ही समाज के सभी वर्गों में नृत्य कला के प्रेमी व अभिरूचि रखने वाले व्यक्ति होते थे जो नृत्य के माध्यम से अपना व दर्शकों का मनोरंजन करते थे। वास्तव में नृत्य ताल और लय के अनुरूप अंग संचालन की प्रक्रिया है। महापुराण में नृत्य में रस, भाव, आंशिक अभिनय, अनुभाव, चेश्टा को मुख्य तत्व बताया है[2] तथा शरीर के विभिन्न अंगों जैसे कटाक्ष, कपोलों, पैरों, हाथों, मुख, नेत्रों, अंगराज, नाभि कटिप्रदेश तथा मेखलाओं द्वारा भाव प्रदर्शन करने का उल्लेख मिलता है।[3] महापुराण में नृत्य का उल्लेख कई संदर्भो में आया है। नृत्य करती हुई देवांगनाएँ नाट्यशास्त्र में निश्चित किये स्थानों पर हाथ फैलाती हुई विभिन्न प्रकार की भाव मुद्राओं का प्रदर्शन करती है। चंचल अंगों को तीव्र गति से घुमाने के कारण नर्तकियों के अंग प्रत्यंग का सौन्दर्य दर्शकों के चित्त को आनंदित कर देता है।[4] नृत्य के साथ वीणा, पुश्कर, बांसुरी, झाँझ, दुन्दुभि, झल्लर, काहल, ताल, मृदंग, पणव, पट्ट, दर्दुर तथा विपन्ची आदि वाद्यों की साहचर्यता नृत्य को मनोरम बना देती है। महापुराण में नृत्य की विभिन्न मुद्राओं का प्रदर्शन हुआ है। जो दर्शकों को चित्ताकर्शक करती है।[5]

1- मुस्कान के साथ मधुर गीत पूर्वक नृत्य करना।
2 भौंहों का संचालन कटाक्षपूर्वक करके नृत्य करना।
3. विलासपूर्ण नृत्य करना।
4. शरीर के अवयवों का प्रदर्शन करना।
5. गतिपूर्वक नृत्य करना।
6. ताल ध्वनि और गायन के सामंजस्य अनुसार नृत्य करना।
7. शारीरिक चेश्टाओं का प्रदर्शन करते हुए फिरकी लेना।
8. मिट्टी के घड़े पुश्पों के घड़े, स्वर्ण घट सिर पर रखकर विभिन्न प्रकार की भावावलियों का प्रदर्शन करना
9. रसपूर्वक नृत्य करना अर्थात् विभिन्न अंगों के सौदर्य को विभिन्न भावों द्वारा प्रदर्शित करते हुए नृत्य करना ।
10. छत्रबंध आदि का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न रूपों में नृत्य करना।
11. एक भुजा पर नर्तकी तथा दूसरे पर नर्तक को नृत्य कराते हुए स्वयं नृत्य करना।

महापुराण में वास्तविक नृत्य उसी को माना गया है जिसमें अंगों की विभिन्न प्रकार की चेश्टाएँ सम्पन्न हो और नृत्य करने वाला अनेक रूपों में अपनी रसभावमयी मुद्राओं का प्रदर्शन करें। नृत्य के भेद मधुर एवं उद्धत दोनों ही रूपों द्वारा मनोरंजन वर्णित है। मधुर नृत्य को यहां लास्य नृत्य कहा गया है तथा उद्धत को तांडव नृत्य।[6] महापुराण में कई प्रकार के नृत्यों का उल्लेख मिलता है। इन नृत्यों की विभिन्न चेश्टाएँ लोगों का मन प्रसन्न करती थी।

rk.Mo uR; &इस नृत्य को भक्तिपूर्वक करने का विधान महापुराण में वर्णित है। पाद, कटि, कण्ठ तथा हाथ को तालों, कलाओं, वर्णों तथा लयों पर संचालित कर उत्तम रस दिखलाना ही ताण्डव नृत्य है।[7] पुश्पांजली अर्पण करते हुए नृत्य करना पुश्पांजली प्रकीर्णक ताण्डव नृत्य तथा विभिन्न रूपों में सुगंधित जल की वर्शा करते हुए नृत्य करना जलसेचन नामक ताण्डव नृत्य है।[8] महापुराण में इन्द्र द्वारा जन्मकल्याणक महोत्सव में हर्शोल्लास से ताण्डव नृत्य किये जाने का उल्लेख है। वहीं मोर के भी ताण्डव नृत्य कर मनोविनोद करने का वर्णन आया है।

vykrpØ uR;[9]&अयोध्या नगरी में जन्मोत्सव मनाने के प्रसंग में इस नृत्य को देखकर सम्पूर्ण नगरी में आनन्द छा जाता है। इस नृत्य में शीध्रता से फिरकी लेते हुए विभिन्न मुद्राओं द्वारा शरीर के अंग–प्रत्यंग का संचालन किया जाता था।

bUæ tky uR;[10]&भगवान के जन्मोत्सव पर आनन्द प्रकट करने हेतु यह नृत्य इन्द्र द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इस नृत्य में नर्तक के साथ नर्तकी भी भाग लेती थी। लेकिन नृत्य इतनी शीघ्रता से सम्पन्न होता था कि स्त्री या पुरूश के स्वरूप का भेद ज्ञात नहीं हो पाता था। अत्यधिक भ्रम के साथ किये गए इस नृत्य की विधि में क्षण में व्याप्त, क्षण में लघु, क्षण में निकट, क्षणभर में दूर, क्षण में आकाश एवं क्षण में पृथ्वी पर आना ही प्रदर्शित होता है। यह नृत्य देखकर दर्शक आनन्द और कौतुक से भर उठते है।

pØ uR;[11]&इस नृत्य में नर्तक नर्तकियों के साथ तेजी से चक्कर लगाते हुए नृत्य करता था। सिर का मुकुट ही घुमने के कारण इसे चक्र नृत्य कहा गया है।

fu'Øe.k uR;[12]&इस नृत्य में नर्तकियाँ फिरकी लगाते हुए कभी दो–तीन हाथ आगे तथा कभी दो–तीन हाथ पीछे आ जाती थी।

vkuUn uR;[13]&महापुराण में इन्द्र द्वारा इस नृत्य को करने का उल्लेख मिलता है। उस समय समाज में इस नृत्य का विशेश प्रचलन था। गार्न्धवों इस नृत्य के समय अनेक वाद्यों को बजाकर दर्शकों के मनोरंजन को बढ़ाते थे। इस नृत्य में नर्तकियाँ भी भाग लेती थी। यह नृत्य श्रृंगार रस से परिपूर्ण तथा सरस होता था।

dVk{k uR;[14]&इस नृत्य में नर्तकियाँ पुरूश की बाहुओं पर अपने कटाक्षों का विक्षेपर्ण करती हुई नृत्य करती है।

lwph uR;[15]&जब नर्तकियाँ नृत्य करते समय सिमट कर सूची के रूप में परिणत हो जाती है तब उसे सूची नृत्य कहते है। महापुराण में किसी पुरूश के हाथ की ऊंगलियों पर लीलापूर्वक नृत्य करना सूची नृत्य है।

ykL; uR;[16]&लास्य नृत्य उन दिनों नवयौवनाओं के मनोरंजन कर लोकप्रिय प्रमुख साधन था। यह नृत्य सुकुमार प्रयोगो से परिपूर्ण तथा रसोत्पादक था। सावन माह में झूला क्रीड़ा करते समय कामिनियों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।

e;j uR;[17]&महापुराण में मयूर का रूप धरकर नृत्य करने का उल्लेख मिलता है। जो वर्तमान की तरह उस समय भी मयूर नृत्य के प्रचलन को संकेतित करता है। मोरों का ताण्डव नृत्य[18] भी उत्कृश्ट होता है जिसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता था।

iqryh uR;[19]&इस नृत्य का विकसित रूप वर्तमान का कठपुतली नृत्य है। इस नृत्य में नर्तक की भुजाओं पर नर्तकियाँ इस प्रकार नृत्य करती है मानों किसी यन्त्र की पट्टी पर पुतलियाँ नृत्य कर रही है।

cg:fi.kh uR;[20]&इसके अंतर्गत नर्तकियाँ मोतियों के हारों को पहनकर इस प्रकार नृत्य करती है जिससे उनकी आकृतियाँ उस हार के मणियों में प्रतिविम्वित हो। इस नृत्य में अनेक स्वरूप परिवर्तित करने के कारण एवं अनेक प्रतिविम्ब पड़ने के कारण इसे बहुरूपिणी नृत्य कहा जाता है।

ckl uR;[21]&इस नृत्य में ऐसा प्रतीत होता है जैसे बांस के ऊपर नृत्य किया गया हो। वास्तव में नर्तकियाँ ऊंगलियों के अग्र भाग पर अपनी नाभि रखकर फिरकी लगाती हुई नृत्य करती है।

uhykt uk uR;[22]&नृत्य जहाँ एक ओर मनोरंजन कर सर्वोत्कृश्ट साधन रहा है वहीं दूसरी ओर यह नृत्य भगवान आदिनाथ को वैराग्य उत्पन्न करने का कारण भी रहा था।

lkefgd uR;[23]&यह नृत्य सामूहिक रूप से किया जाता था। इस नृत्य में अनेक व्यक्ति संयुक्त रूप से एक ही भाव, अनुभाव, रस, चेश्टाओं के साथ नृत्य करते थे।

महापुराण में वर्णित उपर्युक्त नृत्य के प्रकारों को देखकर निश्कर्श निकलता है कि नृत्य राजा, राज परिवार, सामान्य जन, सभी वर्ग के स्त्री पुरूशों में लोकप्रिय थे। स्त्री व पुरूश अलग–अलग व साथ दोनों ही तरह से नृत्य करके मनोरंजन करते थे। महापुराण में नर्तकी को महारत्न की संज्ञा दी है।[24] उत्तरपुराण में वर्णित है कि राजा अन्य राज्य की नर्तकियों को अपने राज्य में सम्मान आश्रय प्रदान करते थे। वे राजसभा की शान बढ़ाती थी तथा राजा, सामन्त, पुरोहित सभी का नृत्यशालाओं एवं राजसभा में मनोरंजन करती थी। बर्बरी व चिलातिका दो ऐसी नर्तकियों का उल्लेख मिलता है जो अपने नृत्य से लोगों का मनोरंजन करती थी।[25] इन नृत्यांगनाओं द्वारा नृत्यकला का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।[26] नाटकाचार्य भी नृत्य सिखाते थे। इनने अपनी पुत्री नाट्यालिका को नृत्य का प्रशिक्षण दिया।[27] नृत्य बालकों के भी मनोविनोद के साधन थे। वर्णित है कि भगवान वृशभदेव बालक्रीड़ा के समय नृत्य के द्वारा मनोरंजन करते

 ISSN - 2250-1991 | IF : 5.215 | IC Value : 79.96

थे।[28] उत्सव भी बिना नृत्य के अधूरे थे, भगवान के जन्म कल्याणक के समय अप्सराओं का लय एवं ताल के साथ फिरकी लगाते हुए लीला सहित नृत्य लोगों को आनन्द प्रदान कर रहा था। नृत्यकारिणी राजदरबार की शान हुआ करती थी। नृत्य करते समय विभिन्न मनोज्ञ वेश–भूशाएँ भी धारण की जाती थी। अतः तत्कालीन समय में नृत्य में इतनी अधिक रूचि के उदाहरण हमें महापुराण में यंत्र–तंत्र देखने को मिलते है जो नृत्य की लोकप्रियता को दिग्दर्शित करते है।

InHk xUFk Iph %&

1. आदिपुराण 16/119
2. वही 14/119
3. वही 14/145–147
4. काश्चिन्नृत्तविनोदेन रेजिरे कृतरेचकाः। नभोरंगे विलोलाङ्यः सोदामिन्य इवोद्रचः।। वही 12/190
5. वही 12/194–197, 14/145–150
6. दीप्तोद्धत रस प्रायं नृत्यं ताण्डवमेकतः सूकुमार प्रयोगाढ्यं ललितं लास्यमन्यतः।। आदिपुराण 14/155
7. वही 14/120–121
8. कृत पुश्पांजलेरस्य ताण्डव रंम्भसम्भ्रमे पुश्पवर्शे दिवोऽमुचन् सुरास्तद्भक्तितोशिताःआदिपुरा.। 14/114
9. वही 14/128
10. वही 14/130–131
11. वही 14/136
12. वही 14/136
13. वही 14/157
14. वही 14/144
15. सलील मनटन काश्चित् सूचीनाट्यमिवास्थिताः।। वही 14/142
16. वही 14/133, 14/155
17. वही 4/77
18. अकस्मात्ता.डवा रम्भ मातेने शिखिनां कुलम्।। वही 3/170
19. वही 14/150
20. वही 14/141
21. वही 14/143
22. वही 7/7
23. वही 14/148–149
24. युश्मद् गृहे महारत्नं नर्तकी किल विश्रुता। उत्तरपुराण 58/67
25. वही 62/429
26. वही 62/465
27. वही 46/299
28. आदिपुराण 14@193